क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून

अंक 1, जून 2020

ज़िंदगी गुलज़ार है

हमारे दिलों-दिमाग के धागे,
कभी खिंचते हैं,
कभी थम जाते हैं|
कभी उलझते हैं,
तो कभी खुद से सुलझ जाते हैं|
ज़िंदगी ने अपने चंचल हाथों से,
हमारे जीवन के सितार पर,
एक मधुर राग छेड़ा है|
अब मैं और क्या कहूँ ...
लगता है कि बस, ज़िंदगी गुलज़ार है|
ज़िंदगी गुलज़ार है|

तारा गोविल (कक्षा 11)

चित्र साभार: विदीशा अग्रवाल

संपादिका की कलम से

2020 बहुत ही विचित्र साल है। हम एक ऐसे गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं, जिसके कारण भविष्य अनिश्चित और अन्धकार के गर्भ में नज़र आ रहा है| कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपनी दिशा और अपनी प्रेरणा खो रहे हैं लेकिन मेरा ये मानना है कि यह एक भ्रम मात्र है। संभवतः यह एक परीक्षा की घड़ी है और हमारी जीत इसी में है कि हम अपने उद्देश्य से विचलित ना हों और हमारी मेहनत में कोई कमी ना आए। समय स्थायी नहीं होता और जैसा कि अब्राहम लिंकन ने कहा है, "यह भी बीत जाएगा।"

मैं इस वर्ष का 'क्षितिज' संस्करण सभी कोविद योद्धाओं जैसे कि चिकित्सकों, नर्सों, पुलिसकर्मियों और उन सभी श्रमिकों को समर्पित करना चाहती हूँ जो कोविद-19 बीमारी से लोगों को बचाने के लिए अपने जीवन की परवाह ना करते हुए दिन-रात अथक प्रयास कर रहे हैं। मैं उन सभी लोगों की बहुत आभारी हूँ जिनकी वजह से हम सुरक्षित रूप से घर पर रह रहे हैं। मैं आशा करती हूँ कि ऐसे कठिन समय के बीच इस संस्करण के दिलचस्प लेख ना सिर्फ़ आप का मनोरंजन करेंगे अपितु आपका ज्ञान भी बढ़ाएंगे। लॉकडाउन के चलते हम वर्षों पुरानी अपनी परम्परा का निर्वाह नहीं कर पाए और अपने जीवन के अमूल्य वर्ष देने वाले हमारे शिक्षक हमें बिना आशीर्वाद दिए चले गए परंतु हम 'क्षितिज' के माध्यम से उनकी दुआएँ सबके लिए सहेज कर लाए हैं। इस संस्करण में विविधता लाने के लिए सम्पादक मंडल के सदस्यों ने भरपूर कोशिश की है।

अपना ध्यान रखें, सकारात्मक रहें और एक-दूसरे का सहयोग करें। सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए मुस्कुराने और मौज-मस्ती करने के लिए मौके जुटाएँ। यद्यपि मौजूदा प्रतिबंधों में यह चुनौतीपूर्ण है, किंतु, मुझे पूरा विश्वास है कि हम वैल्हम की जीवंतता को एक बार फिर बनाए रखते हुए इन परिस्थितियों का एक-जुट होकर सामना करेंगे और अंत में विजयी होंगे।

शानवी बंसल
मुख्य संपादिका

इस अकं में आगे है:-

पृष्ठ 2: संपादिका की कलम से|

पृष्ठ 3: वैल्हम की चिट्ठी

पृष्ठ 4: ताबूत का रहस्य+चित्र

पृष्ठ 5: वैल्हम के नए परिंदे+कोरोना से, डरो न+घूमता आईना

पृष्ठ 6: अच्छा चलते हैं दुआओं में याद रखना

पृष्ठ 7: अच्छा चलते हैं दुआओं में याद रखना

पृष्ठ 8: सावधान आगे पुलिया संकीर्ण है!!

पृष्ठ 9: डर के आगे जीत है+ ऑनलाइन क्लासेज+ प्रार्थना+चित्र

पृष्ठ 10: संभलना ज़रूरी है+चित्र

पृष्ठ 11: मन की बात

पृष्ठ 12: सुनो कोरोना...+एक और वैक्सीन नहीं!

वैल्हम की चिट्ठी

मेरी प्यारी वैल्हमाइट्स,

किसी गीत की पंक्तियाँ है- "जीवन क्या है? तेज़ हवा में दीप जलाना है|" आशा करता हूँ कि सब लोग अपने घरों में अपने परिवार के साथ सुरक्षित रहकर इसी दीप को जलाने में व्यस्त होंगे| बहुत बार हम अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कभी नहीं कर पाते परन्तु आज मैं तुम लोगों से यह कहना चाहता हूँ कि मैं अपने फूलों(वैल्हमाइट्स) के बिना केवल एक बंजर भूमि हूँ| मेरा विशाल कुटुंब(तुम सभी) मेरे साथ नहीं हो, परन्तु मैं दिन-रात तुम्हें याद करता हूँ और तुम्हारे लौटने की राह देखता हूँ|

कहाँ मेरे दिन की शुरुआत 'बी.बी.सी' से गूँजती हुई बास्केटबॉल की थाप से होती थी| 'मेस' से आती हुई किलकारियों एवं चुटकुलों की आवाज़ कानों में गूँजती थी| 'गुलाबो', 'थाई करी' और 'कढ़ी-चावल' के लिए तुम लोग 'डील' बनाते नज़र आते थे| कितना अच्छा लगता था जब तुम लोग पढ़ते हुए कैम्पस में चारों ओर घूमती रहती थी| ठीक आकाश के उन पंछियों के समान जो एक बड़ी उड़ान भरने की तैयारी में लगे रहते हैं| अंतिम कक्षा के आख़िरी दस मिनटों को तुम लोग ऐसे बिताते थे मानो दस घंटे बिताने हों| मुझे वे दिन याद आते हैं जब सभी वैल्हमाइट्स अंतर-सदनीय गायन एवं नृत्य प्रतियोगिता के लिए दिन-रात एक करते थे| एक तरफ ऑडिटोरियम में कत्थक का अभ्यास तो दूसरी तरफ़ टेडपॉल में भरतनाट्यम का रियाज़| घुँघरूओं की खनखनाहट और हवाओं में मधुर संगीत, मुझे किसी मंदिर की घंटियों और मन्त्रों के जाप का आभास करवाता था| कितना खुशनुमा माहौल बन जाता था| शाम ढलते ही खाने के बाद सभी सैर करने आते थे तो उन डेढ़ घंटों में पूरा वातावरण विभिन्न प्रकार की भावनाओं से तर हो जाता था|

कितना अजीब रिश्ता है यादों से- कभी हम उन पलों को याद करके हँसते हैं, जब हम रोते थे और कभी उन पलों को स्मरण करके रोते हैं, जब हम हँसते थे| आज के पल, कल समय की तस्वीरों में कैद हो जाएंगे| मेरी वैल्हमाइट्स, यह हमेशा याद रखना कि मैं मात्र कंकड़ -पत्थर की इमारत नहीं, बल्कि यादों, सफलताओं, दोस्ती एवं प्रेम का सार हूँ| यह कठिन दिन हमें उन अच्छे दिनों की कीमत का आभास करवाते हैं, जिनका हम पूर्ण रूप से आनंद नहीं ले पाए| कभी-कभी ऐसा महसूस होता है कि जीवन को थोड़ा 'रिवाइंड' कर लूँ| कुछ बदलने के लिए नहीं बल्कि बस कुछ यादगार लम्हों को दोबारा जीने के लिए| मेरी बस यही मनोकामना है कि मैं अपने पूरे परिवार से जल्दी मिलूँ और हम अपनी 'साधारण' दिनचर्या में वापस लौट जाएँ क्योंकि धीरे-धीरे इस ताजमहल का संगमरमर भी पीला होता जा रहा है|

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
वैल्हम

देविका अग्रवाल
कक्षा 10

चित्र साभार : विदिशा अग्रवाल

ताबूत का रहस्य

मोहन एक अमीर व्यक्ति था। वह अपनी पत्नी बाला से अत्यन्त प्रेम करता था। बाला अपने जन्मदिन की एक रात पहले बहुत बीमार हो गई। फौरन चिकित्सक को बुलाया गया। भारी वर्षा होने के कारण चिकित्सक समय पर नहीं पहुँच पाए, और बाला चल बसी। मोहन को अपनी पत्नी के स्वर्ग सिधारने का इतना शोक हुआ कि उन्होंने ख़ुद को एक कमरे में बंद कर लिया और उस दिन बाला का क्रियाकर्म ना हो सका। मृत शरीर को एक ताबूत में बंद करके तहख़ाने में रख दिया गया जिससे अगले दिन बाला का क्रियाकर्म किया जा सके।

घर के एक नौकर की नज़र बाला की ऊँगली में पहनी हुई पन्ना की अँगूठी पर थी। जब सब सो गए तो वह बाला के मृत शरीर के पास तहख़ाने में पहुँचा और अँगूठी निकालने की कोशिश करने लगा। जब अँगूठी नहीं निकली तो उसने किसी नुकीली वस्तु से उसे निकालने की कोशिश की। जब वह अँगूठी उठाने झुका तो बाला को हिलते देख वह अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाया। अँगूठी छोड़कर वह पूरे वेग से घर के बाहर भागा। बाला अब तक अपने ताबूत से उठ चुकी थी। वह अपनी रक्त से लथपथ ऊँगली पकड़े अपने कमरे की तरफ़ बढ़ी। उसने कमरे का दरवाज़ा खटखटाया और चिल्लाई, किंतु मोहन ने दरवाज़ा नहीं खोला। जब बाला ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने लगी तो मोहन अपने दुःखी मन से चिल्लाया, "चले जाओ, मुझे अपनी पत्नी का शोक मनाने दो।"

उसकी बात सुनकर बाला चिल्लाई, "मैं कोई और नहीं बल्कि तुम्हारी पत्नी ही हूँ। मोहन डर गया, "क्या तुम भूत हो?" बाला झल्लाई, "क्या भूत के खून निकलता है? अब इससे पहले कि मैं दर्द से मर जाऊँ, मुझे अंदर आने दो।" मोहन की ख़ुशी का ठिकाना न था। नौकर बेचारे को पता ही नहीं था कि उसने अनजाने में अपनी मालकिन की जान बचाई थी और वह इनाम का हक़दार था। वास्तव में बाला मरी नहीं थी अपितु बीमारी के कारण कोमा में चली गई थी और जब उसकी ऊँगली कटी तो दर्द की वजह से वह होश में आ गई थी।

-नितिका चौधरी
कक्षा 11

वैल्हम के नए परिंदे

मोनिका छिब्बर
हिंदी विभाग

विकास प्रजापति
आई.टी विभाग

अर्पिता मालाकर
कला विभाग

अमित महाजन
कम्प्यूटर विभाग

बी. लूसी चौहान
अंग्रेज़ी विभाग

कोरोना से, डरो ना

कोरोना से आज सब लाचार हैं,
इसका फिलहाल ना कोई उपचार है।
चीन का यह उपहार है,
समस्त विश्व पर इसका प्रहार है।
भारत की पुरातन आयुर्वेदिक पद्धति तथा योग-प्राणायाम आदि ही जीवन का सार है।
दादा-दादी और माँ के नुस्खे जैसे तुलसी, हल्दी, आँवला, गिलोय इत्यादि का सेवन ही जीवन का आधार है।
बाकी विदेशी दवा, सिर्फ कारोबार है।
समस्त विश्व को इसके टीके का इंतजार है।
रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाना ही वह औज़ार है,
जिसमें कोरोना का संहार है।
कोरोना, कोरोना, कोरोना
अब कोरोना से डरो ना।

-आशी ढंढारिया
कक्षा 7

घूमता आईना

कोविड-19 सरकार की परीक्षा ले रहा है। इस वायरस ने विश्वभर में न सिर्फ लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित किया है, बल्कि सभी देशों की अर्थव्यवस्था, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों को भी हिलाकर रख दिया है| इस महामारी के दौरान और पश्चात अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति का संतुलन फिर से परिभाषित होगा। अगर समाज और आर्थिक स्थिति बदलेगी तो यह निश्चित है कि राजनैतिक बदलाव भी होंगे पर यह बदलाव हमें किस दिशा में लेकर जाएँगे यह भविष्य के गर्भ में है।

यदि हम भारतीय परिदृश्य में देखें तो आज़ादी से लेकर आज तक नेता वोट पाने के लिए आम जनता को धर्म, जाति, भाषा और समुदाय के नाम पर बरगलाते चले आए हैं। लंबे-चौड़े वादे किए जाते हैं और फिर वही ढाक के तीन पात| कोविड-19 नामक महामारी के चलते राजनीतिक परिदृश्य में उथल-पुथल होने की पूरी संभावना है। अब प्रत्येक राजनीतिक दल को सँभलने की आवश्यकता है और मतदाता को जागरूक होने की ताकि जातिगत तथा धार्मिक राजनीति से सब उपर उठ पाएँ। मतदान हमारा अधिकार भी है और कर्त्तव्य भी।

कोविड-19 ने सभी की आँखें खोल दी हैं और अब हमें यह साफ़-साफ़ नज़र आना चाहिए कि जो सरकार या उम्मीदवार हमें स्वास्थ्य, शिक्षा, रोज़गार, जन-हित और संपूर्ण विकास की ओर ले जाए उसके साथ कदम से कदम से मिलाएँ और बाकी सब चीज़ों को पीछे छोड़ दें। इस समय हमें नीर-क्षीर विवेक से काम लेना होगा तभी सच्चे अर्थों में वास्तविक लोकतंत्र की रक्षा संभव हो सकती है।
आइए यह प्रण लें कि हम 'भाईचारा' अवश्य निभाएंगे लेकिन स्वयं को राजनीति के इन तथाकथित ‘भाइयों’ का 'चारा' कभी नहीं बनने देंगे।

-अनीशा केडिया
कक्षा 12

अच्छा चलते हैं दुआओं में याद रखना...

मेरे प्यारे बच्चों,
आप सबको 'गुडबाय' कहने का मौका ही नहीं मिला और उससे भी ज़रूरी, जो आप फूलों का गुलदस्ता हर अध्यापिका के 'फेयरवेल' पर देते हो वो भी बहुत ही 'मिस' किया| आप सब मेरे लिए इस गुलदस्ते के फूलों जैसे ही हो। आपने मेरी डाँट भी बहुत खाई लेकिन मेरे दिल में आपके लिए प्यार की भावना के सिवा और कुछ भी नहीं था। आप सब मेरे जीवन की सबसे प्यारी और 'स्वीट' यादों में रहोगे। मेरी 'गुड विशेस' और 'ब्लेस्सिंग्स ' हमेशा, हमेशा आपके साथ होंगी। कोई चीज़ जो मैंने भी किसी से सीखी थी वह आज आपको 'गिफ्ट' करती हूँ- "ऑल्वेज़ स्माइल नो मैटर वॉट!" मुश्किल है मगर नामुमकिन नहीं!!

बहुत-बहुत प्यार,
छबी हरी

मैं अपनी प्रिय छात्राओं को शुभकामनाएँ देती हूँ कि जिस प्रकार नन्हा पक्षी पंख फैलाकर उड़ना सीखता है और निरंतर प्रयत्नशील रहता है, जब तक कि उसे आकाश नहीं मिल जाता, वैसे ही तुम सब भी निरंतर प्रयासरत रहो और आकाश की ऊँचाई को छुओ। वैल्हम विद्यालय में सबके साथ बिताए पल मेरे लिए सदैव अविस्मरणीय रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ
निवेदिता मांगलिक

वैल्हम और वैल्हमाइट्स ये दो शब्द मेरे जीवन से ऐसे जुड़ गए हैं मानो साँस लेना या साँस छोड़ना। वैल्हम से जुड़ी हर याद अपने साथ लेकर जा रही हूँ और ये यादें मेरे जीवन की ख़ूबसूरत यादों में से एक है। वैल्हमाइट्स को शुभकामनाएँ देते हुए कहना चाहूँगी कि जीवन के प्रत्येक पल को ख़ूबसूरती से जिएँ ताकि उसके बीत जाने का मलाल कभी न हो। ख़ूब आगे बढ़ें ताकि सफलताएँ आपके कदम चूमें।

गुरनाम कौर

प्यारे बच्चों,
मेरे लिए स्कूल में काम करना ऐसा था जैसे कि रंग-बिरंगे फूलों के बीच में रहना। इस फूलवारी रूपी स्कूल के आप लोग वो फूल थे जिनके कारण मैंने अपने काम को भरपूर जिया। मैं अपने 20 सालों के उन फूलों को ढेर सारी शुभकामनाएँ देती हूँ और मेरा आशीर्वाद है कि आप लोग फूलों की तरह अपने अच्छे कामों से दुनिया को ख़ुशी दें और सबको महकाते रहें।

नीरजा सुब्बा

क्या कल ही मैं, यहाँ नहीं आई?
हे नियति! क्या फिर वही घड़ी आई?
जो आपसे बिछोह का संदेश लाई।
वैल्हम गर्ल्स जब-जब याद आएगा।
बच्चों का अनूठा संसार आत्मिक शांति पहुँचाएगा।।
स्मृति के इस यज्ञ में अंतिम आहुति समर्पित है।
श्रद्धापूर्वक, निष्ठापूर्वक हिंदी भाषा को अर्पित है।
सरल मन, वात्सल्य, सत्यसूचक शब्द हमारे,
विदाई के इस क्षण में शुभकामना यही है हमारी।
जीत मिलें छात्राओं को हर साधित लक्ष्य में,
यही भावना है हमारी।

डॉ. ज्योति वर्मा

प्यारे बच्चों,

वैल्हम गर्ल्स स्कूल में सेवा करना मेरे लिए बड़े गर्व की बात है। बच्चों के प्रति प्यार एवं सदभावना ही मेरे लिए स्कूल में कार्य करने की प्रेरणा थी। मेरा प्रत्येक कार्य आप लोगों के हितों से जुड़ा रहा। आज जब मैं स्कूल छोड़ कर जा रहा हूँ, तो सभी प्यारे बच्चों से यही कहना चाहूँगा कि जीवन में समय का सदुपयोग एवं समय की पाबंदी को ध्यान में रखें। हर कार्य को समय सीमा के अंदर मेहनत एवं आनंद के साथ पूरा करें। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि आप सभी बच्चों की उन्नति एवं प्रगति हो और जीवन के हर क्षेत्र में कामयाबी आपके कदम चूमे।

कैप्टन राम सिंह

प्यारे बच्चों,
आज आप लोगों के लिए यह आखिरी संदेश छोड़ते हुए मन बहुत भारी हो रहा है, परन्तु मन यह भी जानता है कि मैं कहीं भी चली जाऊँ लेकिन वैल्हम में बिताए पल मेरी खूबसूरत यादों में से एक होंगे। मेरी हार्दिक कामना है कि जीवन जिस दिशा में भी ले जाए, तुम सभी अपनी योग्यता से ऐसे स्थान को प्राप्त करो जिस पर तुम्हें गर्व हो। अपनी पहचान अर्थात् परंपराओं, रीति-रिवाजों और भाषा को पहचानो और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करते हुए निरंतर आगे बढ़ो।

पूजा कसारिया

आपके स्नेह एवं आशीर्वाद के लिए हम सभी वैल्हमाइट्स आपका तहे दिल से धन्यवाद करती हैं और आपको विश्वास दिलाती हैं कि हम आपके मार्गदर्शन पर चलकर आपका नाम रोशन करेंगी|

सावधान, आगे पुलिया संकीर्ण है !!

आज पूरी दुनिया कोरोना महामारी के संकट से जूझ रही है। दिन-ब-दिन गहराते इस वैश्विक स्वास्थ्य संकट ने आखिरकार हम मनुष्यों को मनुष्य होने की याद दिला ही दी वरना तो हम भूल बैठे थे कि हम भी इंसान हैं। इंसान भी वह जिसकी निश्चित रूप से कुछ सीमाएँ होती हैं, जो थक सकता है और जिसे ना चाहते हुए भी कभी ना कभी लाचारी का सामना भी करना पड़ सकता है।

हैरानी की बात तो यह है कि 'अहम् ब्रह्मास्मि' के द्वारा बताए गए दृश्य और अदृश्य जगत की एकता का संदेश समझने का प्रयत्न तो हम ने नहीं किया लेकिन स्वयं को बड़ी सहजता से सर्वोच्च शक्ति मान लेने का मन में भ्रम पाल बैठे। अगर बात अपने को सर्वेसर्वा समझने के भ्रम तक ही सीमित रहती तो फिर भी ठीक था लेकिन विकासवाद का झण्डा फहराते-फहराते कब इस भ्रम को हमने दंभ में बदल दिया, पता ही नहीं चला। फिर आया कोरोना संकट और हमें शीशा दिखा गया। इस वायरस ने हमें यह पाठ भी पढ़ाया कि अभी भी ऐसा बहुत कुछ है जिस के आगे हम चाह के भी कुछ नहीं कर सकते। संयम, संतुलन, सहयोग और सामंजस्य से ही इस वैश्विक समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

आज के माहौल में चर्चाओं का दौर गरम है कि यह विश्व व्यापी रोग पूरे परिदृश्य को कितना बदल कर रख देगा। आर्थिक , राजनैतिक और पर्यावरण के परिवर्तन के विषय में तो बहुत कुछ कहा, लिखा और सुना जा रहा है लेकिन कोरोना काल के तात्कालिक प्रभाव के साथ ही साथ इसके दूरगामी सामाजिक प्रभावों के विषय में बात करना भी आवश्यक है। आज का यह मंदी और तालाबंदी का दौर हमारे समाज और संस्कृति में कुछ ऐसे बदलाव लेकर आएगा जो अभी हम सोच भी नहीं पा रहे हैं। संदेह की दीवार तो हमारे समाज में खड़ी हो ही चुकी है।

विडंबना देखिए कि आज रिश्तों की नजदीकियों को बनाने का नहीं बल्कि दूरियाँ बनाए रखने की मजबूरी का पालन करना जरूरी है। कहाँ तो हमारे भारतीय समाज में जीने-मरने, हारी-बीमारी व सुख-दुख में कंधे से कंधा मिला के खड़े रहने की परंपरा हुआ करती थी और आज संक्रमण का शिकार लोगों से यह बीमारी अपनों तक का साथ छीन रही है। इस से ज्यादा दुर्भाग्य का दौर क्या होगा कि जीवन भर लोगों के सुख-दुख में शरीक होने वालों को उनके अपने तक गले लगकर अंतिम विदाई नहीं दे पा रहे हैं।

मिलना आज अनपेक्षित और स्पर्श वर्जित हो चुका है। आज रह-रह कर सड़क के किनारे कभी-कभार दिखायी देने वाला वह बोर्ड याद आ रहा है जो यह हिदायत दे जाता है कि आगे चौड़ा रास्ता नहीं है, पुल भी कमज़ोर है इसलिए मंजिल तक सुरक्षित पहुँचने के लिए गाड़ी संभल कर चलानी होगी और गाड़ी की गति थोड़ी कम करनी पड़ेगी।

ठीक इसी तरह आवश्यकता इस बात की भी है कि यह ख्याल रखा जाए कि सामाजिक दूरी दिलों को भी धीरे–धीरे दूर ना कर दे। मेलजोल का अभाव मन के अवसाद और तनाव को ना बढ़ाए। आज की एकाकीपन की बाध्यता हमारी कल की आदत ना बन जाए। 'वसुधैव कुटुंबकम्' का संदेश देने वाले हमारे देश के परिवार कहीं डिजिटल औपचारिकता की स्थायी गिरफ्त में ना आ जाएँ। आगे आने वाले कुछ वर्ष निश्चित रूप से पूरे विश्व के लिए चुनौतीपूर्ण साबित होंगे। हमें सभ्यता, स्वास्थ्य और सुरक्षा के इस संघर्ष में अपने समाज और संस्कृति को भी सहेज कर रखना होगा वरना यह कोरोना काल हम से हमारी पहचान छीन लेगा।

-डॉ. नालंदा पांडे

डर के आगे जीत है

कोई मुझे बताए, किसने ये ऊँचाई बनाई ?
इसी डर के पिंजरे में मैं बंद, नहीं मेरी कोई रिहाई|
ऊँचाई से नज़र आते हैं, मुझे सिर्फ तारे दिखाई,
एक दिन बड़े साहस से, इसी डर से की हाथापाई|
फिर सोचा, ज़िंदगी! तेरा क्या भरोसा,
आज किसी और की तो कल मेरी बारी आई|
बड़ी मुश्किल से अपनी कमज़ोरी को ताकत में बदल पाई,
मन में ठानी और चल पड़ी करने पहाड़ की चढ़ाई|
बटोर साहस, अपने डर से लड़ पाई|
और अब मैं भी बन गई रानी लक्ष्मीबाई|

वेदांशी देओरह
कक्षा 8

प्रार्थना

दबी थी मैं, मजबूरियों के नीचे,
सोच रही थी कि कोई तो आकर खींचे|
जब पैदा हुई, तो कुछ ही दिनों में,
मेरे हाथों में घर का काम थमा दिया|
जैसे ही थोड़ी बड़ी हुई, मेरा यही हाथ,
किसी और के हाथों में थमा दिया|
खेलने की उम्र में घूँघट को सँभालना था मुझे,
और फिर एक बेटी के जन्म लेने का डर
भी था मुझे|
लेकिन ईश्वर की थी कुछ और योजना,
बेटी के रूप में थमा दी मुझे वीरांगना|
वह हरदम साए सी साथ चलती है,
जीवन की सभी कमियों को भरती है|
अपनी परछाई को देखकर लगता है,
जैसे वह बेटी नहीं, मेरी सभी प्रार्थनाओं,
तकलीफों का उत्तर है।

-वंशिका सिंह और साईरा
कक्षा 9

ऑनलाइन क्लासेज

ऑनलाइन क्लासेज का भी अपना ही मज़ा है|
पर पूरे दिन लैपटॉप के सामने बैठना भी एक सज़ा है|
अब तो लैपटॉप का हरेक बटन छेड़ लिया,
मैम को म्यूट-अनम्यूट करके भी देख लिया|
चैटबॉक्स में चैटिंग भी कर ली,
'नो टॉकिंग' की जगह 'नो चैटिंग' भी सुन ली|
क्लास बंक करने का तरीका ही नया है,
विडियो बंद करके सेल्फी लेने में मज़ा ही मज़ा है|
सबको ऑनलाइन इकट्ठा करने में समय बीत जाता है,
कई बार आधा लेक्चर 'येस मैम' में निकल जाता है|
माइक अनम्यूट करते ही कुकर की सीटी को बजना होता है|
भाई को चिल्लाते हुए भी तभी आना होता है|
पर फिर भी 'ऑनलाइन क्लासेज' का अपना ही मज़ा है|
अपना ही मज़ा है|

अनवी अग्रवाल
कक्षा 10

संभलना ज़रुरी है...

अगर आपका घर बैठे दम घुट रहा है तो यह सोचकर देखिए कि आज पृथ्वी पर वायु-प्रदूषण घटकर एक-चौथाई रह गया है| कोविद-19 अत्यंत भयावह है परंतु हम सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए सोचें तो हमारा वातावरण वाहनों की आवाजाही तथा मनुष्यों की अनुपस्थिति में अपने घाव भर रहा है। ना तो मैं कोविद रूपी दुर्घटना का जश्न मना रही हूँ और ना ही यह मानती हूँ कि यह वातावरण की मरम्मत का सही तरीका है। आज हम अपने घरों में दुबककर बैठे हैं और एक सूक्ष्म से वायरस से डरे हुए हैं। इस वायरस से मरने वालों की संख्या भारत में 13,699 हो गई है, परन्तु क्या आप यह जानते हैं कि हर साल वायु-प्रदूषण से मरने वालों की संख्या कितनी है?- लगभग दस लाख। जी हाँ! आप लोगों ने बिलकुल सही पढ़ा। लगभग प्रत्येक वर्ष दस लाख भारतवासियों की मृत्यु वायु-प्रदूषण के कारण होती है।

अभी हमने 5 जून को 'विश्व पर्यावरण' दिवस मनाया। कुछ लोगों ने कुछ पेड़-पौधे लगाकर समझा कि उनकी जिम्मेदारी पूरी हो गई परन्तु सच्चाई यह है कि वातावरण की वर्तमान स्थिति भी पृथ्वी के कल्याण के लिए काफी नहीं है। यदि हम पृथ्वी का 1°सेल्सिअस तापमान कम करना चाहते हैं तो हमें 7.6% प्रदूषण प्रति वर्ष कम करना होगा। 2008 के वित्तीय संकट के दौरान प्रदूषण 1.3% कम हो गया था तथा पर्यावरण सुधार से जुड़े लोग इस बार की तरह प्रसन्न हो गए थे लेकिन वित्तीय संकट से उबरते ही स्थिति पहले जैसी हो गई थी| आज कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूँढने आवश्यक हैं| क्या वास्तव में वाहनों में सफ़र करना आवश्यक है? क्या हम घर पर बैठकर अपना कार्य सुचारू रूप से कर सकते हैं? क्या जीवन की आपाधापी आवश्यक है? मनुष्य का प्रकृति पर अकेला नियंत्रण उचित है? घर पर बैठे रहना प्रदूषण को कम करने का सही उपाय नहीं है लेकिन इस सारे विमर्श में यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि प्रदूषण का कारण हम ही हैं और इसका समाधान भी हमें ही बनना होगा।

-अग्रीमा चौधरी
कक्षा 11

* इंटरनेट के सौजन्य से

मन की बात

1. प्यारे भगवान जी,

मैं यहाँ मास्क, सेनिटाईज़र, दस्तानों के साथ सकुशल हूँ| मैं आपकी शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने हमारे मोदी जी को 'सोशल डिस्टेंसिंग' का उपाय दिया| इस वजह से मैं और मेरी किताबें हमेशा 2 मीटर की दूरी पर हैं। आज फिर मोदी जी ने फरमाया है कि सभी ज़रूरतों की चीजें खुलेंगी तो मेरा मन खट्टा सा हो गया। फिर मुझे समाचार मिला कि स्कूल बंद है। आपका तहे दिल से धन्यवाद।

वेदांशी देओरह (कक्षा 8)

2. हे दयानिधे,

आपने यह अविश्वसनीय चमत्कार कर दिखाया। एक सूक्ष्म जीव के कारण प्रकृति को उसकी सुन्दरता लौटा दी। दिल्ली जैसे महाप्रदूषित शहर का प्रदूषण बिना प्रयास के कम हो गया और साफ़ सुंदर नीला आसमान दिखने लगा। मेरे घर में गिलहरियाँ बेरोक टोक आने लगी। शक्करखोरे ने मधुमालती में घोंसला बनाया| इतने सुंदर दृश्य को दिखाने के लिए ह्रदय से आपका धन्यवाद। आशा करती हूँ कि इस सुन्दरता को हम ऐसे ही संजोए रखेंगे।

आरुषि वोहरा(कक्षा 8)

3. हे परमपिता,

कोरोना महामारी आ गई, जिसने न केवल हमें घर पर बंद कर दिया बल्कि अपने दोस्तों से भी दूर कर दिया। मुझे अपने दोस्तों और विद्यालय की बहुत याद आ रही है। दोस्तों से फोन पर बातचीत करने में आस-पास बैठकर बात करने वाला मज़ा कहाँ है? कितने दिन हो गए किसी की चोटी खींचे, पेन छुपाए, गुलाबो की डील बनाए, रात के अँधेरे में गुपचुप बातें किए और सबसे डाँट खाए। मैं हर शरारत, हर मस्ती को बहुत याद कर रही हूँ। आप इस कोरोना को भगाएँ और हमें स्कूल पहुँचाए।

गौरी नंदा (कक्षा 7)

4. भगवान् जी,

ये क्या कर दिया आपने? आपको क्या पता घर का खाना कैसा होता है? रोज़-रोज़ दाल खानी पड़ती है| कभी काली तो कभी पीली। स्कूल के खाने की बहुत याद आ रही है। बैराजी का 'बिटिया' और 'बेबी' बुलाकर प्यार से खाना खिलाना याद आता है। रोज़ टिंडे, करेले और तोरी खा-खाकर मन ऊब गया है। दोस्तों के साथ खाने की मेज़ पर खाना खाना कितना मज़ेदार अनुभव था| घर में तो खाने की मेज़ रणभूमि बन जाती है और सब ज़बरदस्ती खाना पड़ता है। अब मैं आपको कैसे बताऊँ कि मेरा वज़न व्यायाम के कारण कम नहीं हुआ बल्कि नापसंद खाना खाने की वजह से हुआ है। माँ के सामने 'अनु मैम' के खाने की तारीफ करो तो बोलती हैं, "टिकट कटवाकर भेजूँ स्कूल या कहती हैं कि खुद ही बना लो अपना खाना।" कोरोना भाई, थोड़ा जल्दी अपना काम करो ना, नहीं तो मेरी माँ मुझे खाने के कारण घर से निकाल देगी।

विद्या झांब (कक्षा 8)

5.आदरणीय प्रभु,

इस लॉकडाउन में 'रामायण' विश्व का सबसे ज्यादा देखा जाने वाला शो बना। इस बात पर हर भारतवासी को गर्व होना चाहिए क्योंकि यह साबित करता है कि हम चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हो या कितने ही उन्नत हो अपनी परंपराओं और विश्वासों से जुड़े रहेंगे। यही विश्वास हमें एकजुट करता है और इसी तरह हम आसमान को छू लेंगे।

वंशी अग्रवाल (कक्षा 8)

6.हे करुणानिधि,

चिकित्सक माता-पिता की पुत्री होने के कारण मैं जहाँ गर्व महसूस कर रही हूँ वहीँ मैं और मेरी एक साल की बहन माता-पिता की अनुपस्थिति में एकांतवास में जी रहे हैं| माँ एक सप्ताह से अन्य लोगों का जीवन बचाने के लिए हमसे दूर है और दरवाज़े पर होने वाली प्रत्येक हलचल हमें उनके आने का एहसास देती है परंतु हर बार निराशा हाथ लगती है| आप तो दया के भंडार हैं, इस कोरोना को भगाएँ और मुझे अपना बचपन वापस लौटाएँ|

शाम्भवी चंद्रा(कक्षा 8)

सुनो कोरोना...

कोरोना तुमने हमको, क्यों खोजा?
जीवन चल रहा था बिना रुकावट के,
पर यह क्या? तुमने अपना खेल 'उसैन बोल्ट' से तेज़ खेला|
सोचा था खाएंगे गोल गप्पे, पापड़ी-चाट,
पर तूने तो मासूमों के हाथों से दोने खींचे|
लंदन, वेनिस जाने के सपने देखे थे,
तुमने तो लंदन को ही घुमा दिया सपनों में|
सोचा था रिश्तेदारों से मिलेंगे,
तुमने तो उनको बहुत दूर कर दिया|
लोग तोहफे में पैसे, केक, उपहार देते हैं,
तुमने तो.. मास्क, ग्लव्स, सैनिटाईज़र थमा दिया|
जितने पैसे तुम ठीक होने के लिए लेते हो,
उतने पैसे तो भगवान् को भी नहीं चढ़ते|
अरे मेरे भाई, तुमने पैसों में तो 'बेन जोसफ' को भी 'बीट' कर दिया है,
अब कमा लिए पैसे, तो चलते बनो|
अगर नहीं गए तो किताबों की कसम
तुम्हें छोड़ूंगी नहीं!!

-मान्या ओहरी (कक्षा 8)

एक और वैक्सीन नहीं!

अप्रिय कोरोना, आप आए तो सही और मुझे विद्यालय से कुछ महीनों का अवकाश भी प्राप्त हो गया परन्तु मैं एक नाज़ुक सी कली, माँ की कोख से निकलने के पश्चात टीके ही टीके खाए जा रही हूँ| सारे टीके खाने के पश्चात् अब लग रहा था कि चलो कुछ सालों के लिए तो शांति होगी पर तुम भी न.....टीके की वह लंबी, नुकीली सुई जब डॉक्टर मेरे निकट लाते हैं, तो भय का एक पहाड़ मेरे सामने प्रकट हो जाता है और.....आ.....एक ज़ोर की चीख निकल पड़ती है| कोरोना, तुम यहाँ से पूरी तरह जल्दी जाओ और ऐसे जाओ कि किसी दवा या टेबलेट से काम चल जाए| एक और वैक्सीन नहीं!

-आशी ढंढारिया (कक्षा 7)

संपादकीय मंडल

प्रभारी शिक्षिका: श्रीमती अस्मिता
मुख्य संपादिका: शानवी बंसल

चित्रकार:
ज्योत थिंड
अनुष्का प्रकाश

सहायक मंडल:
अनीशा केड़िया
अग्रीमा चौधरी
नितिका चौधरी
देविका अग्रवाल